दादी माँ ने हाँ कह दी

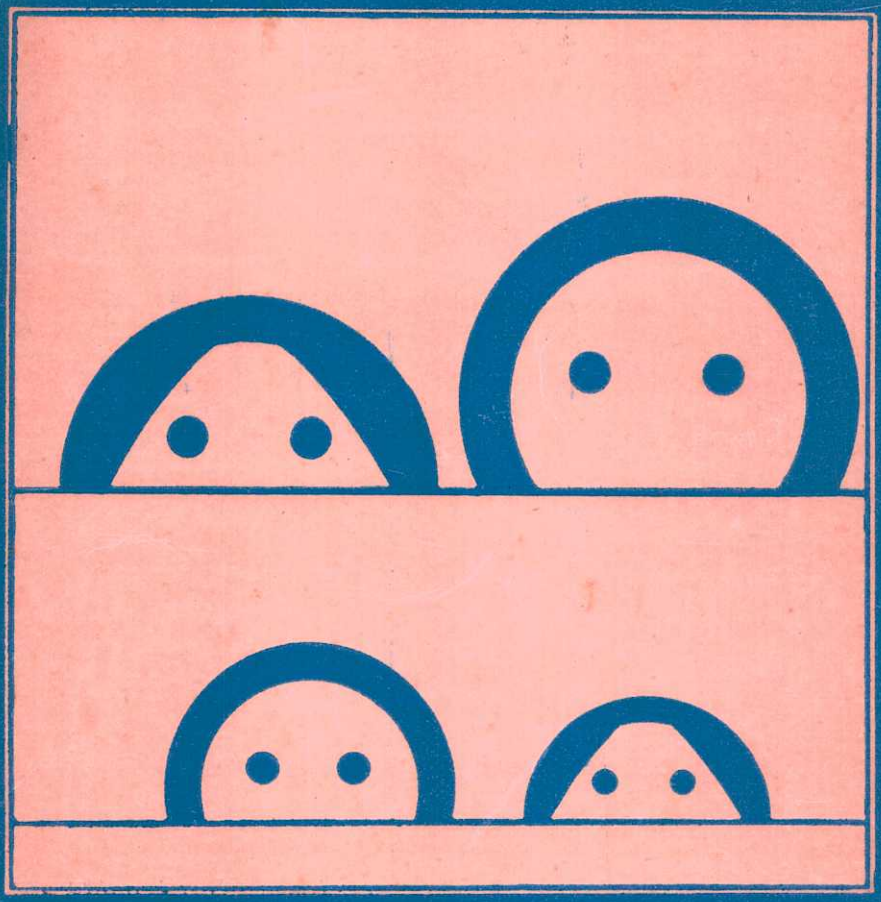

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

दादी मां ने हां कह दी

दादी माँ ने हाँ कह दी

योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17 बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग,
नई दिल्ली-110002

मूल्य : तीन रुपए, पचास पसे

पुस्तक शृंखला : 147

मुद्रक :
युगान्तर प्रेस,
मोरी गेट,
दिल्ली-110006

प्रस्तावना

प्रत्येक विकास का ध्येय है—आम जन के जीवन में गुणात्मक बढ़ोत्तरी। भारत में विकास के अनेकानेक कार्यक्रमों की सफलता प्रौढ़ शिक्षा के कार्यक्रमों से सीधे जुड़ी है। जनसंख्या शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा का एक अभिन्न अंग है। विकास कार्यक्रमों के सार्थक परिणामों के लिए जरूरी है कि जनसंख्या की असीमित बढ़ोत्तरी पर नियंत्रण हो। यह तभी संभव है जब प्रौढ़ों में इस भयावह समस्या के विभिन्न पहलुओं की जानकारी और उनसे निपटने की समझ पैदा हो। और यह समझ एक शैक्षिक कार्यक्रम के जरिए ही संभव है। भारत के करोड़ों प्रौढ़ों में बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या के बारे में जागरूकता लाने की आवश्यकता है ताकि अपनी जिन्दगी को बेहतर बनाने हेतु वे अपने उत्तरदायित्वों को स्वयं महसूस करने लगें।

इसी संदर्भ में, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने एक महत्त्वपूर्ण पहल की है। प्रौढ़ों की शिक्षा में जनसंख्या शिक्षण को जोड़कर प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम को चलाने सम्बन्धी एक अभिनव प्रयोग संघ ने किया है जिससे कि प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में वैकल्पिक दृष्टिकोणों एवं संरचनाओं का विकास किया जा सके।

फैमिली प्लानिंग फाउंडेशन के सहयोग से भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने एक प्रायोगिक परियोजना का संचालन किया। यह प्रयोग प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी तीन स्वयंसेवी संस्थाओं—'जनता कल्याण समिति' रेवाड़ी (हरियाणा); 'उत्कल नवजीवन मंडल', अंगुल (उड़ीसा) तथा अजमेर प्रौढ़ शिक्षण समिति, (राजस्थान)—

के सक्रिय सहयोग से सम्पन्न हुआ। रेवाड़ी के 16 गांवों, अंगुल के 25 गांवों और अजमेर शहर के 20 मोहल्लों में जनसंख्या-शिक्षण से सम्बद्ध प्रौढ़ शिक्षा का यह प्रायोगिक कार्यक्रम चलाया गया।

यह प्रयोगात्मक परियोजना लोगों की जनसंख्या शिक्षण सम्बन्धी उभरती आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने की दिशा में एक प्रयास था। इसमें मुख्य ज़ोर इस बात पर रहा कि वे सभी शिक्षार्थी, जिनमें से अधिकांश जनन-आयु समूह के हैं, अपनी समस्याओं के समाधान के लिए इस शिक्षा-योजना से समुचित लाभ उठा सकें। इसका उद्देश्य स्थानीय वास्तविकताओं से शिक्षार्थियों का परिचय कराना रहा है जिससे यह कार्यक्रम अधिक उपयोगी, सार्थक और प्रगतिशील बन सके।

इस कार्यक्रम के लिए अनुवर्ती सामग्री के अन्तर्गत भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने चार पुस्तकें तैयार की हैं। इनसे नवसाक्षर प्रौढ़ों में साक्षरता को बनाए रखने में सहायता करने के साथ-साथ उन्हें जनसंख्या शिक्षण के बारे में जानकारी देना भी संभव हो सकेगा। हमें आशा है कि प्रौढ़ शिक्षा और जनसंख्या शिक्षण कार्यकर्त्ता इन्हें उपयोगी पायेंगे।

इन पुस्तकों को और उपयोगी बनाने में पाठकों की राय का हम स्वागत करेंगे।

"शफ़ीक़ मैमोरियल"
17-बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग,
नई दिल्ली-110002
अक्तूबर 1984

जे० सी० सक्सेना
अवैतनिक महासचिव
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

कहानियाँ

1. दादी माँ ने हाँ कर दी 9

2. मिल गए भगवान 23

3. स्वर्ग और नर्क 33

दादी माँ ने हाँ कह दी

[एक]

गिरजो दादी जब बोलने पर आती है, तो भगवान ही बचाए। सुनने वाला बिस्तर बोरियाँ बाँध कर भाग जाता है, पर मजाल को दादी थक जाए। बासठ साल की लम्बी उमर और अनगिनती किस्से-कहानियाँ। गिरजो दादी को सोचना भी तो नहीं पड़ता।

कभी गाँव में महामारी फैलने की बात ले बैठती है, तो अपने पराए जाने किस-किस को याद करके आँसू बहाने लगती है। कभी अंग्रेज़ों के किस्से, तो कभी जमींदारी के कारनामे। लोग कहते हैं—गिरजो दादी का दिमाग मशीन है मशीन, जिसमें पैसा डालते ही टिकट बाहर आ जाता है। फर्क यही है कि दादी किस्से-कहानियाँ बिना पैसे सुनाती है।

दादी बताया करती—अरे, मेरा ब्याह तो मरों ने उस बखत कर दिया था, जब मैं आठ साल की ही थी। यूं समझो कि तुम्हारे बाबा के साथ खेला करूं थी....." और जैसे ही कोई पूछ बैठता—"दादी बहुत पीटते होंगे बाबा खेल में ?" तो दादी लठिया उठा कर कहती—"आ, मरे कहीं के तुझे मैं बताऊँ अरे करमजले, तेरे

बाबा ने तो कभी फूल की पंखुडी भी मुझे नहीं छुआई थी..."

दादी को यह याद नहीं कि कब वे सही ढंग से समझ पाई कि ब्याह क्या होता है। जब तक दादी की उम्र बाईस थी, तब तक दादी तीन बच्चों की माँ बन गई थी।

पहला बच्चा मर गया था, फिर दो लड़कियाँ हुईं। बड़ी का नाम रक्खा था रतनी और छोटी का नाम रख दिया सुरसती।

दादी कहती है—"मेरी सास दिन भर रोया करे थी। उसे एक ही गम खावे था कि बेटा अब तक क्यूँ नहीं हुआ।.....अब बताओ.....यो क्या मेरा कसूर था कि रतनी और सुरसती पहले आ गई...अरे, भगवान ने जो दिया, ले लिया।"

फिर तो जाने क्या हुआ कि दादी ने अपनी सास की मनोकामना पूरी कर दी और तीन बेटों की माँ बन गई। दादी कहती—"अब क्या बताऊँ रे, जब मेरा सोहन हुआ तो बस दिवाली ही मन गई सारे घर में। मेरी वो ही सास जो मुझे कुलछनी कहने लगी थी, अब मेरे पे बुरी तरियो निछावर जावे थी।.....मेंने भी सोचा कि चलो इसकी मुराद पूरी हो गई और मेरा भी जनम सुधर गया।"

दादी कहती हैं कि तीन बेटों के बाद भी मेरी सास का मन नहीं भरा। "कहा करे थी कि बहू बच्चे भगवान की देन हैं। सब अपने भाग का खावें, किसी का क्या लेवें। बस रे भाई, क्या बताऊँ.....बेटों के चक्कर में फिर दो लड़कियाँ आ गईं।"

दादी अपने बच्चों के पैदा होने की बात बड़े चाव से सुनाती है, लेकिन जब दादा जी के मरने का जिक्र आया है, तो दादी आज भी फफक-फफक कर रोने लगती है। दादी सुबकते हुए बताती है—"बस बेटे, काल आया था, ले गया चुटकी में उड़ा के। पहले आया बुखार, फेर निकली बड़ी माता। बोहत झाड़ फूंक करवाई पर सब बेकार....." और दादी सुबकती रहती है।

दादी ने रतनी का ब्याह ग्यारह साल की उम्र में कर दिया था और बेचारी रतनी किस्मत की इतनी हेटी निकली कि जब उसके खेलने खाने के दिन थे, तभी बेचारी मर गई। उसका किस्सा तो दादी जब कभी सुनाती है, तभी भगवान को और रतनी की सास को अच्छी गालियाँ सुना देती है—"अरे यो भगवान भी बेशरम है, जो मेरी

फूल सी रतनी को उठा के ले गया मरा।.....मरे वा उसकी सास, जिसने बच्चा होने के बखत लापरवाही करके रतनी की जान ले ली.....दाई जब बुलाई, जब मेरी रतनी ऐंठ के रस्सी बन गई....."

दादी की दूसरी बेटी सुरसती ने भी बच्चे तो आठ पैदा किए, लेकिन किस्मत की मार यह रही कि सारे मरते गए और ले दे कर एक लड़की ही किसी तरह बची। सुरसती गाँव में हर बखत बीमार रहती है। दादी बहुत दुखी रहती है सुरसती की तरफ से। अब भी दादी जब कभी भगवान को याद करती है, तो एक बार जरूर कहती हैं—"अरे भगवान। कहीं देखता सुनता हो, तो गरीब सुरसती के यहाँ भी एक बेटा दे दे।"

आज सुबह से दादी बेचैन है। बड़े सोहन की बहू तड़फड़ा रही है। दोनों देवरानियाँ और सोहन की बड़ी-छोटी बेटियाँ इधर-उधर भाग-दौड़ कर रही हैं। दादी के मन में उथल-पुथल मची हुई है। अभी अपने घर के कोने में रक्खे हुए भगवान जी के सामने बैठकर दादी ने उनसे विनती की है—"हे भगवान। तेरे खजाने में कोई कमी तो है नहीं। सब को तू दोनों हाथ से लुटाता है, फिर भला मेरे सोहन को एक बेटा क्यों नहीं दे देता?...भगवान अब के अगर सोहन के यहाँ बेटा हो जाए, तो तुझे छत्तर चढ़ाऊँगी.....सच कहती हूँ भगवान, जी भर के परसाद बाटूँगी तेरा....."

लेकिन भगवान के पास शायद बेटों की कमी है। दादी ने तो हर बार यही विनती दोहराई है। जाने क्या

होता है, हर बार जब दादी थाली बजाने के लिए तैयार होती हैं, तभी ये भगवान ! सोहन के घर लड़की भेज देता है। बेटे के चक्कर में सोहन के यहाँ एक-एक करके पाँच बेटियाँ पैदा हो चुकी हैं।

सोहन ने जैसे-तैसे हाई स्कूल पास कर लिया था और गाँव के स्कूल में मास्टरी मिल गई थी। खेती ज्यादा थी नहीं, जो ज्यादा कुछ हो पाता। उस पर तीन भाई और पाँच बहनें। घर की हालत बस ढिचर-पिचर ही थी।

दादी से कई बार सोहन की बहस हो जाती थी।

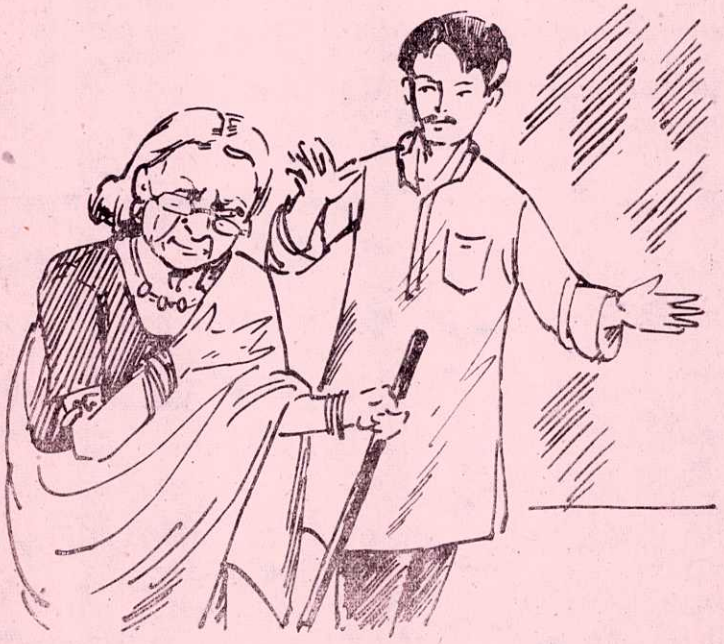

जब दादी कहती—"बेटा सोहन ! मुझे तेरी तरफ से ही सारी चिन्ता है...भगवान किसी तरी एक बेटा दे देता, तो

मैं भी पोते का मुंह देख लेती। मुझे सोने की सीढ़ी से सुरग मिल जाता।"

सोहन झल्ला कर यही कहता—"बेकार की बात क्यूं करती है माँ। तेरी सोने की सीढ़ी क्या मेरे बेटे से ही बनेगी माँ ? क्या धरमवीर और प्रेम के बेटे तेरे पोते नहीं हैं ?"

"अरे क्यूँ नहीं हैं पागल। लेकिन.....तेरे घर का दीपक बिना मर जाऊँ क्या ?" दादी बेसब्री से कहती।

"देख माँ। तेरी इसी जिद ने एक-एक करके मुझे पाँच बेटियों का बाप बना दिया। बेटा होना होता, तो हो जाता माँ। आजकल के जमाने में घर चलाना कितना मुश्किल है, यह तुझे क्या पता ?" सोहन दबी जबान से अपनी बात समझाने की कोशिश करता, लेकिन दादी का दिमाग टस-से-मस नहीं हुआ।

दादी का सोचना रुक गया। धरमवीर की बहू ने आकर बताया कि सोहन की बहू का हाल खराब है। दाई ने कह दिया है कि बहू बेहद कमजोर है।

दादी बेचैन है। कभी दाई को डाँटती है। तो कभी भगवान के सामने जाकर हाथ जोड़ती है। दादी के मन का सपना—"सोहन के घर बेटे का सपना" कैसे पूरा हो, यही बेचैनी दादी को इधर से उधर घुमा रही है।

सोहन बहुत परेशान है। आखिर जब दाई पूरी तरह जवाब दे देती है, तो सोहन प्रेम को बुलाकर बाहर की तरफ दौड़ता हैं। दादी चीखती है—"अरे कहाँ जा रहा है तू ?"

सोहन तेजी से चला गया और लगभग पन्द्रह-बीस मिनट बाद हस्पताल की लेडी डाक्टर का बैग लिए हुए लौटा। दादी ने पूछा—"कहाँ गया था रे" सोहन ने कहा—"माँ डाक्टरनी को लाया हूं।" और दादी के देखते-देखते ही डाक्टरनी अन्दर कमरे में चली गयी।

कमरे में जाकर डाक्टरनी ने जो देखा, उसे देखकर अचम्भे में पड़ गयी। कमरे में अंगीठी जल रही थी, जिस का कड़वा धुआँ कमरे में भरा हुआ था। लगता था, अच्छे भले आदमी का दम घुट जाएगा।

डाक्टरनी ने खिड़की खुलवाई और धुएँ की अंगीठी कमरे से बाहर निकलवा कर सोहन की बहू को देखा। धुएँ के कारण बहू का दम घुट रहा था और वह बेहोश हो गई थी। डाक्टरनी ने जैसे तैसे कुछ देर में उसे संभाल लिया।

दादी बेचैनी से कभी इधर तो कभी उधर घूमें जा रही थी। इस बीच भी भगवान से कितनी ही बार बात कर चुकी थी दादी। उसकी आँखें तरस रही थीं सोहन का बेटा देखने को। बड़े बेटे का लाड़ला ही तो दादी को सोने की सीढ़ी चढ़ा कर स्वर्ग दिलाता है।

तीन चार घंटे तक डाक्टरनी बेचारी जूझती रही। बीच बीच में वह बाहर आकर सोहन और धरमबीर से बात करती थी तो दादी के कान उधर लग जाते थे, लेकिन बेचैनी कम नहीं हो रही थी। दादी ने सुना डाक्टरनी सोहन से कह रही थी—

"मास्टर जी। आपकी पत्नी तो बहुत ज्यादा कमजोर हैं। आपने तो कभी अस्पताल आकर दिखाया तक

नहीं ? बताइए भला, यह अस्पताल सरकार ने बनाया है तो किसके लिए ?"

"क्या बताऊँ, बहन जी। खयाल ही नहीं आया पहले"। शर्मिन्दा होकर सोहन ने कहा था और गिड़गिड़ा कर हाथ जोड़ता हुआ बोला था—"अब आपके ही हाथ में जिन्दगी है बहन की। इसकी जान जैसे भी हो, बचा लीजिए।"

डाक्टरनी की मेहनत सफल हो गई और सोहन की बहू की जान बच गई...लेकिन! दादी का सपना बिखर गया डाक्टरनी ने बाहर निकल कर बताया—"मास्टर जी। आपकी पत्नी की जान बच गई है, लेकिन बच्चा... उसे मैं कैसे बचा पाती ? बच्चा तो पेट में ही मर गया था...लड़का मरा हुआ है।"

डाक्टरनी की बात सुनकर दादी ने सिर पीट लिया और चीखने लगी। डाक्टरनी ने समझाया—"दादी। यह क्या ? आप तो समझदार हैं...आप हिम्मत छोड़ देंगी तो बच्चों का क्या होगा ?"

सुबकती हुई दादी बोली—"अरी बेटी। मेरा तो घर उजड़ गया। इस मरे भगवान ने अब की बार बेटा दिया भी तो मरा हुआ ?...तू ही बता बेटी, धीरज धरूँ तो कैसे धरूँ ?"

डाक्टरनी ने दादी को समझाया, लेकिन दादी को तो जैसे होश ही नहीं था। एक ही रट लगा रक्खी थी—"अब मेरे सोहन का वंश कैसे चलेगा...इन लड़कियों में से एक मर जाती तो मैं सबर कर लेती...।

दादी की इस बात को सुनकर डाक्टरनी का धीरज टूट गया। उसने ऊँची आवाज़ में कहा—"यह क्या कह रही हो दादी ? क्या लड़की की जान का कोई मोल नहीं होता क्या लड़की को पैदा करने में माँ पोड़ा नहीं भोगती ?...गलत बात है दादी।"

इतना कह कर उसने दादी का हाथ पकड़ा और जच्चा के कमरे में ले जाने लगी। सहम कर दादी बोली—"अरी मुझे कहां खींच कर ले जा रही है ?" उसी तेज आवाज में डाक्टरनी बोली—"आओ, दादी। आओ तुम्हें तुम्हारा पोता दिखाती हूँ। देख लो जरा और फिर बताओ कि यह जीकर क्या करता ?"

दादी ने झटके से हाथ छुड़ा लिया और फटी-फटी आंखों से डाक्टरनी की तरफ देखने लगी। घर के सभी लोग सहमे हुए खड़े थे।

डाक्टरनी ने कहा—"दादी ! हिम्मत रख कर सुनो। तुम्हारा पोता अगर ज़िन्दा पैदा होता, तो सारे घर पर और खुद पर बोझ बन कर रहता...इसके दोनों पांव खराब हैं दादी..और सिर में पानी भरा हुआ है...जिन्दा रहता तो मोहताज बनकर रहता। न चल पाता और न सोच पाता। बोलो, दादी। चाहिए तुम्हें ऐसा पोता ?... बताओ दादी, इस पोते के लिए कौन सी लड़की को कुरबान करोगी तुम ?

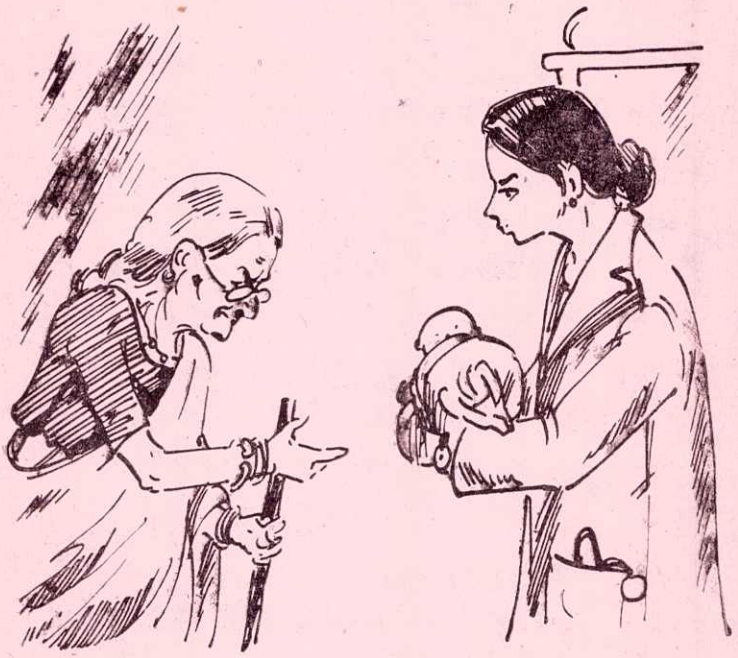

दादी चुप...बिलकुल गुमसुम...छत की तरफ निगाहें लगाए ताक रही थी। डाक्टरनी ने शान्त स्वर में कहा —"माफ करना, दादी। मैं कुछ ज्यादा बोल गयी।"

और दादी एकदम फफक पड़ी—"नहीं, नहीं, बेटी।

तू माफी क्यों माँगती है ? ये तो मेरी किस्मत की मार हैं।" दादी ने डाक्टरनी को पास बिठा लिया।

डाक्टरनी दादी को समझाती हुई बोली—"दादी। यह किस्मत की मार नहीं, बल्कि गरीबी और नासमझी की मार है। आपकी बहू असल में इतनी कमजोर है कि बच्चे को जन्म दे पाना सम्भव नहीं रहा। एक तो कमजोरी, दूसरे ठीक से देखभाल नहीं हुई। सच मानो, दादी। आपकी किस्मत तो बहुत अच्छी है जो बहू की जान बच गई है।"

सोहन ने कहा—"बहन जी। आपका शुक्रिया किन शब्दों में करूँ ? आपने मेरी पाँच बेटियों को उनकी माँ दे दी है।

"सच कह रहे हैं भाई साहब। इस बार जाने कैसे इन्हें भगवान ने बचा लिया है। अब आपको बहुत सावधान रहना होगा··· ये अब और बच्चे की माँ नहीं बननी चाहिए, वरना इनकी जान नहीं बच पाएगी।" डाक्टरनी ने कहा।

दादी को जैसे बिच्छू ने डंक मार दिया हो। एकदम चीख कर बोली—"क्या कर रही है बेटी ? अब सोहन के घर बच्चा नहीं होना चाहिए ? ये क्या जुलम की बात कह रही है बेटी ?"

डाक्टरनी समझाते हुए बोली—"दादी। क्या तुम चाहती हो कि तुम्हारी पोतियों की माँ···तुम्हारी बहू मर जाए ? अगर यही चाहती हो तो तुम्हारी मर्जी। मेरा फ़र्ज तो यह है कि सच बात बता कर आप लोगों की मुसीबत कम कर दूं, मानना, न मानना तो आपकी मर्जी पर है।"

सोहन ने ही कहा—"बहन जी। आप हमारे घर के लिए भगवान बन कर आई हैं। आप भरोसा रखिए, हम आपकी बात समझते हैं और जैसा आप कहेंगी, वैसे ही हम करेंगे।"

दादी ने सोहन की तरफ देखा तो सोहन बोला—"माँ। अब जमाना बदल रहा है, इसलिए हमें भी बदलना होगा। डाक्टरनी भी ठीक कह रही हैं। आखिर तुम्हीं बताओ मां, हम तीनों भाइयों के कुल मिलाकर जो चौदह बच्चे हैं, क्या हम इन्हें ठीक तरह से पढ़ा-लिखा सकते हैं ? मेरी पाँच बेटियाँ हैं, तीन धरमवीर की और

तीन प्रेम की हैं। ये इसीलिए तो हुई कि तुम्हें पोता चाहिए था।...नहीं माँ ! अब हम एक लड़के के मोह में लगातार जिम्मेदारियों को बढ़ाएंगे नहीं।"

दादी चुप बैठी थी। लगता था, उसके भीतर कहीं उथल-पुथल हो रही है। तभी डाक्टरनी ने कहा—"दादी। यह तो सोचने-सोचने का फर्क है, जिस दिन तुम अपनी पोतियों को उतना ही प्यार करने लगोगी, जितना पोतों को करती हो, तो सच मानो, दादी। लड़की ही तुम्हें लड़का लगने लगेगी।"

दादी अब भी चुप ही थी। आखिर डाक्टरनी हँस कर बोली—"एक बात बताऊँ, दादी। मेरी माँ और मेरे पिता जी मुझे बेटा कहते हैं। हम दो बहनें हैं और दोनों ही पढ़ लिख कर ऊँचे पद पर हैं। मैं डाक्टर हूं और मेरी दीदी कालेज में प्रोफेसर हैं।.....

दादी बोली—"तेरा भाई नहीं है बेटी ?" तपाक से डाक्टरनी बोली—"हैं क्यों नहीं ? ये सोहन, धरमवीर और प्रेम—मेरे भाई नहीं हैं क्या ?...दादी। ये तो भावना के रिश्ते हैं···अगर मेरे माता-पिता भी एक भाई की इंतजार में रहते और हम पाँच-छः बहनें हुई होतीं, तो जानती हो दादी क्या होता ?"

दादी एकदम मशीन की तरह बोल पड़ी—"क्या होता बेटी ?" डाक्टरनी हँस कर कहने लगी—"आज तुम्हारी बहू यानि मेरी भाभी की जान चली गयी होती, चूँकि तब मैं पढ़ लिखकर डाक्टर कभी न बनी होती।"

दादी एकटक डाक्टरनी को देख रही थी। अचानक कुछ सोच कर बोली—"अरे सोहन। मेरी बेटी कब से

यहाँ आई हुई है, इसे कुछ खिलाओगे-पिलाओगे नहीं क्या ?"

और डाक्टरनी को जाने क्या सूझी कि बढ़कर दादी के गले से जा लगी। दादी सिर पर हाथ फेरती हुई बोली--"बेटी। तूने तो आज मेरी आँखें खोल दी हैं। अब तू ही बता--मैं क्या करूँ ?"

डाक्टरनी खुश होकर बोली--"दादी। मुझे तुम्हारी आज्ञा चाहिए। सोहन भाई साहब से मैं बात कर चुकी हूं। अब बस तुम्हारी "हाँ" चाहिए।"

दादी बोली--"किस बात की हाँ कराएगी बेटी ?" तभी सोहन बोला--"माँ ! हम तीनों भाई कल ही जाकर अपना आपरेशन कराएँगे और अपने परिवार को सीमित रखकर खुशहाली का सपना साकार करेंगे। अब हम और बच्चे नहीं चाहते। माँ ! देर से ही सही, हमें खुशहाली का रास्ता मिल गया है।"

दादी ने झिझकते हुए पूछा—"अरे क्या तीनों ही एक साथ आपरेशन कराओगे ?"

"हां, माँ। हमने तय कर लिया है। तुम्हारी हां सुनने को हम बेताब हैं।" तीनों ने एक साथ कहा।

दादी बोली--"अपनी ही रट लगाए रक्खोगे या मेरी इस डाक्टरनी बेटी को कुछ खिलाओगे भी ?" और हँस कर दादी बोली—"कल ही जाओगे न ? अरे...देर क्यों करते हो, पगलों। अब आज करा सको तो जाओ, आज ही करा लो.....अच्छे काम में देर नहीं किया करते।"

०००

मिल गए भगवान

[दो]

श्याम और राधा की जोड़ी देख कर एक बार तो सारा का सारा शहर ही कह उठा था—"सचमुच ये तो राधा और श्याम ही हैं। भगवान ने कहीं फुर्सत में बैठकर बनाया है दोनों को।" जब श्याम बारात के साथ दूल्हा बन कर बग्घी में बैठा हुआ जा रहा था, तो मोहल्ले वाले उसे देख-देख कर खुशी से झूम रहे थे।

राधा जब दुलहन बन कर आई थी, तो श्याम की माँ के पैर जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। खुशी-खुशी बहू को घर ले गई थी और बेटे-बहू की नजर उतार कर कहा था—"जुग-जुग जीयो, मेरी रानी। बस अब तो जल्दी से एक चाँद सा पोता दे दो। मेरी एक ही कामना है बहू।"

राधा शर्म से लाल हो गई थी और नजरें चुरा कर जब उसने श्याम की तरफ देखा था तो श्याम शरारत भरी मुस्कान ओठों पर लिए राधा की ओर टकटकी लगाए देख रहा था। राधा शर्म से सिमटी जा रही थी।...

राधा अब अकेली कमरे में लेटी हुई यादों के सुनहरे संसार में खोई हुई है। उसकी आंखें रोने के कारण सूजी-सूजी सी हैं। अभी कुछ देर पहले तो माँ ने हद ही कर दी। ऐसा तो कभी आज तक हुआ नहीं था कि श्याम से इस प्रकार साफ-साफ शब्दों में बोली हो। राधा ने कानों से सब कुछ सुना था।

मां अपने आवेश पर काबू नहीं कर पाई थी शायद और चीखते हुए उसने कह दिया था—"हां, हां श्याम। मैं अब और इन्तजार नहीं कर सकती। आखिर पूरे आठ साल तक मैंने कलेजे पर पत्थर रख कर इन्तज़ार ही तो किया है। मैं तरस गई हूं पोते का मुँह देखने को...मुझे पोता चाहिए श्याम। तेरा बेटा चाहिए। कान खोल कर सुन लें, मैं अब और इन्तज़ार नहीं कर सकती।"

श्याम ने हमेशा की तरह कहा था—"यह क्या पागलपन है माँ ? अब डाक्टर कह चुके हैं कि राधा माँ नहीं बन सकती, तो भला मैं क्या कर सकता हूं ?"

"कर क्यों नहीं सकता ? राधा को तलाक दे कर दूसरी शादी क्यों नहीं कर सकता ? आखिर तुझमें क्या कमी है ? क्या तुझे बेटा नहीं चाहिए ?" माँ ने उसी प्रकार साफ-साफ आवेश में कह दिया था। श्याम बेहद बौखला गया और चीख कर बोला था—"मां! तुम तो पागल हो गई हो। तुम्हें बेटा चाहिए या कि पोता ? मैं राधा के बिना नहीं रह सकता।"

राधा ने करवट बदली। विचारों का तार टूट गया। श्याम अपने दफ्तर चला गया था और माँ अपने कमरे में

भगवान की पूजा करने लगी थी। राधा का सिर भारी हो गया। उसने चाहा कि उठकर कुछ करे, लेकिन मन नहीं हुआ और वह लेटी रही।

राधा के सामने बीते हुए आठ साल फिल्म की तरह आने लगे। वह सोच रही थी अपनी और श्याम की पहली मुलाकात के बारे में। श्याम उसे अचानक मिल गया था उस दिन जब वह वर्मा जी के यहाँ पार्टी में अपने भाई के साथ गई थी। यहीं श्याम भी आया हुआ था। वर्मा जी ने परिचय कराया था श्याम का और भैया उनसे ऐसे घुल मिल गए थे, जैसे वर्षों पुरानी जान पहचान हो दोनों की।

भैया ने कहा था श्याम से—"मिस्टर श्याम। ये हैं मेरी बहन राधा, अंग्रेजी में एम० ए० कर रही हैं।"... और मेरी तरफ मुड़ कर भैया ने कहा था—"ये हैं श्याम वर्मा, [एस० डी० ओ०] हैं यहां। हाल ही में आये हैं।"

राधा को क्या पता था था कि यह छोटी सी भेंट ही प्रेम का रूप ले लेगी और यही प्रेम, विवाह में बदल जाएगा। राधा को माँ नहीं थी, इसलिए जब विवाह के बाद वह श्याम के घर आई, तो उसे लगा था कि उसे अपनी खोई हुई माँ मिल गई है।

राधा ने सिर को झटका दिया और करवट बदल कर आसमान ताकने लगी। उसे फिर यादों ने घेर लिया...

जब उस दिन वह चाय लेकर श्याम को देने जा रही थी, तो पांव फिसलने के कारण गिर पड़ी। माँ पूजा कर रही थी। जैसे ही गिरने की आवाज आई, माँ उठकर दौड़ी थी। अरे श्याम जरा आ तो जल्दी से बेटा।.....अरे देख बहू गिर गई है.....दौड़कर आ बेटे.....जल्दी कर।"

राधा उठकर बैठ गई थी। तभी श्याम आ गया था। राधा ने बहुत कहा कि कुछ नहीं हुआ, बिलकुल ठीक हूं, लेकिन माँ ने एक नहीं सुनी थी। बोलती जा रही थी—"देख बहू! अब अगर तू रसोई में गई, तो मेरा मरा मुँह देखेगी.....चल अपने कमरे में आराम कर।"

और आज.....आज माँ ने साफ-साफ कह दिया—"राधा को तलाक देकर दूसरी शादी क्यों नहीं कर सकता? आखिर तुझमें क्या कमी है?.....

राधा का सिर घूम रहा था। उसे उठना अच्छा नहीं लग रहा था। सर पर तकिया रखा और लेट गई। कब नींद आ गई, उसे पता ही नहीं चला।

श्याम आज जल्दी ही घर आ गया। उसने देखा कि घर में सन्नाटा है। नौकर को आवाज दी और कमरे में आया। राधा उसकी आहट से जाग गई थी। श्याम जैसे ही पास आया, वह उसके गले से लगकर फफक पड़ी। श्याम उसे जितना ही रोकता, वह उतनी ही जोर से फफक पड़ती।

नौकर चाय ले आया, तो श्याम ने कहा—"उठो, राधा। चलो, हाथ मुंह धोकर आओ। मैं तब तक चाय बनाता हूं।" राधा उठी और हाथ-मुंह धोने चली गई। श्याम ने चाय बना दी और एक प्याला राधा को थमाते हुए कहा—"लो चाय पीकर तैयार हो जाओ। हमें बहुत जरूरी काम से बाहर जाना है।"

राधा ने कहा—"श्याम मैं कुछ कहना चाहती हूं तुमसे। कहूं या न कहूं.....यही उलझन है।"

"कमाल हैं भाई। अब राधा को श्याम से कुछ कहने में उलझन भी होने लगी ?"—मुस्कराते हुए श्याम बोला।

"नहीं, श्याम। ऐसी बात नहीं। तुम तो जानते हो कि मेरा तुम्हारे सिवा कोई नहीं है।"—राधा की बात काटते हुए श्याम ने तपाक से कहा—"और मेरे लिए तो जैसे शहर की सड़कों पर राधा ही राधा खड़ी रहती हैं ?"

राधा ने श्याम के गले में बांहें डाल कर कहा—"आखिर तुम माँ की बात मान क्यों नहीं लेते ?"

"उसी का प्रबंध करने तो चल रहे हैं हम। माँ की इच्छा पूरी करने का इन्तज़ाम करके आया हूं, राधा। सारे काग़ज़ात तैयार करा आया हूं। बस, अब तुम तैयार होकर मेरे साथ चल दो।" श्याम ने कहा तो राधा चौंक

पड़ी—"क्या कहा ? तुम कागजात भी तैयार करा आये हो ?".

"जी हाँ, सब तैयार हैं। अब आप उठिए तो सही। आप के दस्तखत भी तो जरूरी हैं।" श्याम सहज ढंग से बोला। राधा बेचैन सी हो गई। कहने लगी—"मेरे दस्त खत जरूरी हैं तो यहीं करा लो ना ?" और उसकी आंखें छलछला पड़ीं।

श्याम ने उसी प्रकार सहज भाव से कहा—"रानी जी। आपका चलना जरूरी है। चलिए, उठिए अब।"

राधा को लेकर श्याम कार में बैठकर चल पड़ा। राधा चुप थी.....श्याम भी चुपचाप गाड़ी चला रहा था। राधा के मन में उथल-पुथल मच रही थी। गाड़ी सड़क पर दौड़ रही थी और राधा के दिमाग में माँ के शब्द दौड़

रहे थे—"राधा को तलाक देकर दूसरी शादी क्यों नहीं कर सकता तू ?"—उसने अपनी आंखें बन्द कर लीं।

गाड़ी का ब्रेक लगा, तो झटके से राधा की आंखें खुल गयीं। राधा ने सामने देखा, तो वहां अनाथाश्रम था वह कुछ समझ नहीं पाई। श्याम ने कहा—"चलो, भीतर चलो। तुम्हारे भैया भी वहीं पर हैं।" और राधा कुछ समझ पाती या पूछती, इस से पहले ही श्याम उसे लेकर अनाथाश्रम में चला गया।

राधा ने देखा कि वहाँ उसके बड़े भाई के साथ एडवोकेट वर्मा जी पहले से ही बैठे हुए हैं। दोनों ने कहा—"आ गए तुम लोग ?" श्याम बोला—"जी हाँ, वर्मा साहब। अब देर-दार क्या है राधा के दस्तखत भी करा लीजिए। हम दोनों बच्चा गोद ले रहे हैं।"

"बच्चा। हम बच्चा गोद ले रहे हैं ?.....तुम.....तुम मुझसे तलाक नहीं.....बच्चा।" और राधा बेतरह रोती हुई श्याम के गले लग गई।

"हां, हां, राधा। हम एक अनाथ बच्चे को गोद लेकर पालेंगे, पोसेंगे। उसे माँ-बाप का प्यार देंगे, राधा। बताओ, तुम मेरी बात से सहमत हो न ?" श्याम ने पूछा।

"कहां है मेरा बच्चा, श्याम ?" राधा बेचैन हो गई। तभी अनाथाश्रम की संचालिका एक गोल मटोल से गोरे चिट्टे बच्चे को लेकर आई और राधा को देकर बोली—"लीजिए बहन। ये रहा आपका बच्चा।" और राधा बच्चे को चूमने लगी, बेतरह चूमती जा रही थी और

उसकी आंखों से अपने आप आंसुओं का झरना जैसे फूट पड़ा था।

बच्चे को गोद लेने की सारी कानूनी कार्यवाही करके श्याम राधा के भाई और वर्मा जी को साथ लेकर घर आया। घर में आते ही श्याम ने आवाज दी—"मां...मां... देखो कौन आया है?" मां पूजा के कमरे में थी। उठकर आई तो देखा कि राधा की गोद में बच्चा है। हड़बड़ा कर मां ने पूछा—"अरे, यह बच्चा...किसका है.....कहां से उठा लाया है?"

"यह तुम्हारा पोता है मां। हमने गोद लिया है इसे" —श्याम ने मां को बताया और राधा से बोला—"राधा मां की गोद में दे दो बेटे को।"

"अरे.....रे.....क्या कर रहे हो बेटा? पता भी लगाया है कि किसका बच्चा है? इसके मां-बाप, जात-धरम का भी कुछ पता किया है तुमने? यूं ही गोद ले लिया क्या?" मां ने विद्रोह के स्वर में पूछा। राधा भी ठिठक कर जहाँ की तहां खड़ी रह गयी।

तभी श्याम ने पूछा—"मां। एक बात बताओगी मुझे? तुम्हारे भगवान की जात-धरम क्या है?"

मां तड़क कर बोली—"भगवान की जात-धरम कहीं होता है, जो मैं तुझे बताऊंगी? लेकिन आदमी का धरम, जाति, उसका खानदान जरूर होता है।"

"कमाल करती हो, मां। तुम्हारे भगवान की न जाति है, न धरम है और जिन्हें वह बनाता है, उनका धरम, जाति, तुम पूछ रही हो।.....जरा देखो तो इस

बेखौफ बेजुबान बच्चे को जिसका संसार में कोई नहीं है .....देखो मां ! देखो, इसकी नन्हीं हथेलियों की इन रेखाओं में इसका भाग्य नहीं छिपा है क्या ?" श्याम ने तड़प कर कहा ।

मां चुप खड़ी थी । तभी वर्मा साहब बोले—"माफ कीजिए, बहन जी । कल तक आप पोते का मुंह देखने को तड़प रही थीं और आज आपके बेटे-बहू जिसे अपना बेटा कह रहे हैं, उसी को आप पोता नहीं मानतीं ?.....अगर राधा की जगह आप की अपनी बेटी होती, तो क्या आप उसे तलाक दिलातीं ? आज एक तरफ तो बच्चों की लाइन लग रही है और दूसरी तरफ श्याम और राधा जैसे जोड़े हैं जो बच्चे के लिए तरसते हैं। जिनके पास दस बच्चे पालने का साधन है, वहां एक भी नहीं होता और जहां एक के लिए दूध तक नसीब नहीं, वहाँ दस-दस होते हैं । बहन जी. अगर आपने इसे आज नहीं अपनाया, तो भगवान का ही अपमान होगा...जी हां । अब तो यह बच्चा न हिन्दू है, न मुसलमान, बल्कि सिर्फ बच्चा है, भोला सा बच्चा है ।"

श्याम ने माँ को समझाया—"माँ । तलाक लेकर मैं और राधा हमेशा के लिए उजड़ जाते । इसीलिए मैं तेरी इच्छा पूरी करने के लिए बेटा ले आया हूं, मां ।.....जरा देख तो सही.....पालने में झूलते तेरे भगवान जैसा ही भोलाभाला तो है यह भी.....देख तो सही ।"

और जाने कैसा जोश माँ को आया कि वह पूजा के कमरे में गई और भगवान का चरणामृत लाकर बच्चे के

सिर पर मलती हुई बोली—"ला, बेटी। मेरा नन्हा श्याम मुझे दे।" और बच्चे को गोद में लेकर चूमने लगी। वर्मा

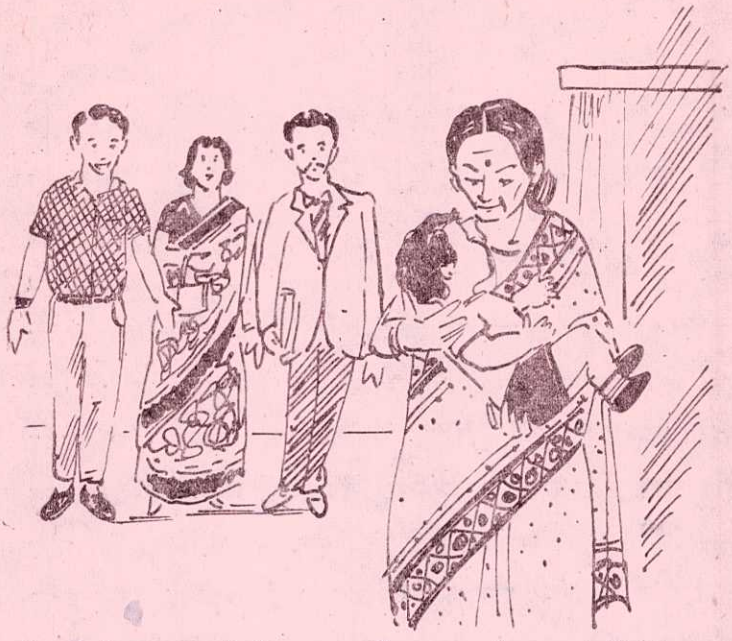

जी को देख कर बोली—"भाई साहब! आज से बेजान भगवान की पूजा बन्द, अब तो मुझ जीते-जागते भगवान मिल गए हैं।"

और राधा की आंखों से खुशी के आंसुओं का झरना बह चला।

□□□

स्वर्ग और नर्क

[तीन]

दोनों पड़ोसी और दोनों की नाम-राशि भी एक। एक का नाम रामकुमार और दूसरे का नाम रामलाल। फर्क दोनों में इतना कि सारा मोहल्ला इन्हें असली नाम से न बुलाकर 'स्वर्ग' और 'नर्क' के प्रतीक नामों से जानने लगा है।

रामकुमार बिजली दफ़्तर में एग्जीक्यूटिव इंजीनियर हैं और रामलाल उसी दफ्तर में बड़े बाबू। एक-दूसरे से परिचय होना स्वाभाविक ही है, लेकिन दोनों में बात कभी-कभी ही होती है। हालाँकि दफ्तर का टाइम एक ही है, लेकिन जहाँ बड़े साहब आराम से दस बजे दफ्तर जाते हैं, वहीं बड़े बाबू रोज आठ बजे ही घर से निकल जाते हैं और देर रात गए "ओवरटाइम" करके ही थके-मांदे घर लौटते हैं।

बड़े बाबू का घर। आइये, आपको लिए ही चलते हैं। लीजिए आ गया बड़े बाबू श्री रामलाल का मकान... सुन रहे हैं यह बेमजा चखचख और तूफानी चीख-पुकार—

"...मर जा बेशरम-गधी कहीं की। तोड़ दी न मेरी दवात...ले मैंने भी तोड़ दिया है तेरा कलम...कर ले मेरा

क्या करेगी ?" चीख रहा है बड़े बाबू का कोई सुपुत्र... "अच्छा, अब चीखेगी हरामखोर कहीं की...ले खूब चीख

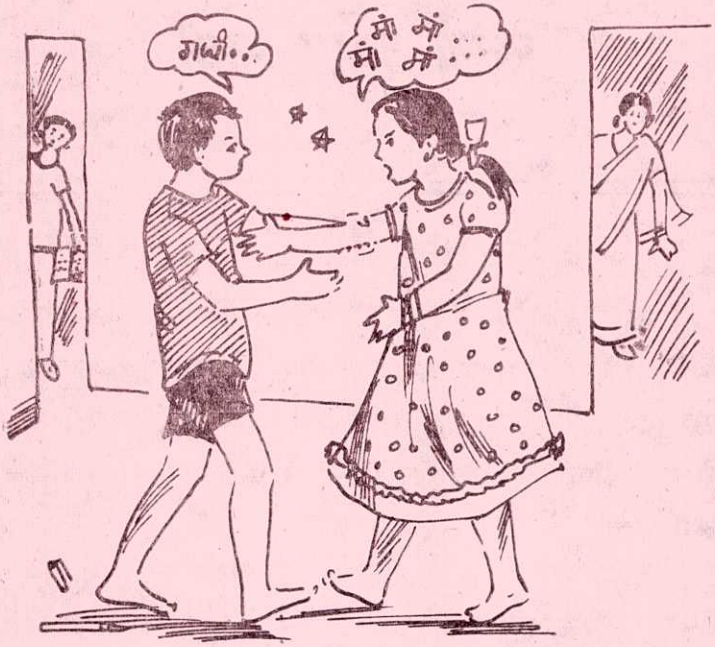

ले...और जोर से चीख..." और डीठ सुपुत्र ने बहन के गाल पर थप्पड़ जड़ दिया।

तूफान की गति तेज हुई। बड़े बाबू की बेटी चिल्लाई —"मम्मी...ओ...मम्मी...देखना इस कमीने लल्लू के बच्चे ने मेरी कलम तोड़ दी है। मुझे मारा है कमीने ने।" और लल्लू की चीख उसकी अवाज को पार कर रही है—"और इस गधी ने तो मेरी दवात ही फोड़ दी है। ...हरामजादी...और मारूंगा तुझे...बोल क्या करेगी तू मेरा ? और दूसरा थप्पड़ भी लल्लू ने जड़ दिया है बहन के गाल पर।

गोद के टिल्लू को रसोई में फेंककर इनकी माँ इस युद्ध की रोकथाम के लिए आ गई है। देखिए क्या होता है अब। झुंझलाई हुई माँ ने लल्लू और बेबी की गाल पर दनादन चांटे जड़कर अपना गुब्बार निकाल दिया—"मरो, किसी बखत तो चैन से बैठ जाया करो। हर बखत झगड़ा करते रहते हो...मौत भी तो नहीं आती इन कमीनों को।"

मां की मार ने आग में घी डाल दिया है। दोनों ने चीख कर आसमान सर पर उठा लिया है। लगता है, जैसे घर में भूकम्प आ गया है।

इतने में दूसरे कमरे में पढ़ता हुआ बाबू का सबसे बड़ा बेटा रतन उबलता हुआ आया और झुंझला कर चीखा—"माँ! इन गधों को मारने-पीटने से क्या होगा भला? मैं तो परेशान हो गया हूं। जरा पढ़ने को बैठता हूं, तो इन सब का महाभारत शुरू हो जाता है। आखिर मैं पढ़ूं भी तो कहाँ जाकर पढ़ूं?

और तभी रसोई में नया तूफान उठ आया। चीख की आवाज ऊंची हो रही है। मम्मो दौड़ी—"हाय राम! अरे रतन देख तो सही, ये गुल्लू तो जल गया है। खौलता दूध गिरा लिया है इसने अपने ऊपर। हाय राम...अब मैं क्या करूं? अरे रतन, बेबी, चमन, लल्लू...कहाँ मर गए हो सब के सब। अरे आओ...गुल्लू जल गया है।"

सारे दौड़ पड़े और ढूंढ मच गई बरनौल की। बेबी कह रही है चमन ने रखी थी, चमन कहता है लल्लू के पास थी। बरनौल की ट्यूब थी जरूर, लेकिन अब कहाँ

है, यह किसी को पता नहीं। रतन दौड़ कर गया है पड़ोस से माँगने।

बगल के स्टोर से खांसती हुई बुढ़िया सास की तेज गुर्राहट सुनाई पड़ रही है..."अरी करमजली। क्या कर दिया है तूने। ए गए खानदान की, इन बच्चों को क्या जिन्दा ही खा जाएगी तू ? कौन सो मरे भगवान ने मुझे पोतों की खान दे दी है, जिन्हें तू हरदम मारूं-खाऊं करती रहती है. ले-दे कर ये पाँच पोते क्या दे दिए भगवान ने, हर बखत उनके पीछे ही पड़ी रहती है...हाय, हाय...बेशरम। जला के रख दिया मेरे फूल से पोते को।" लगता है बुढ़िया का दम फूल गया है, वरना गालियों का यह झरना अभी सूखने वाला नहीं था।

पाँच बेटों और तीन बेटियों की माँ रो रही है। करे भी क्या बेचारी ? दिन भर इस जंजाल में पिसती रहती है, पल भर भी तो चैन नहीं मिलता।

रतन पड़ोस से बरनौल माँग लाया और गुल्लू के जले हुए हाथ-पैरों पर लगा दिया। आज का दिन तो उसका बेकार हो ही गया है।

शाम होने जा रही है। अभी कुछ देर में पोला चेहरा, फटा कमीज और ढेर सारी थकान के साथ दफ्तर से कागज पेंसिल, रबड़ आदि थैलों में लेकर बड़े बाबू यानी इन आठ बच्चों की वीर फौज के कमाण्डर आते होंगे।

आते ही दिन भर की झल्लाहट दिमाग में लिए उबलेंगे...चीखेंगे और खूब चिल्लायेंगे।

जब कोर्ट में मुकदमें पेश होंगे तो ये जज बनकर

किसी को गालियां देंगे तो किसी को थप्पड़ मारेंगे और फिर...जी हां। फिर जो भी मिलेगा, उसे चबाकर हड्डियों

का ढाँचा बनी हुई इस फौज की अम्मा को किसी और नालायक की माँ बनाने की तैयारी में जुट जायेंगे।

इनके बच्चे एक खाट पर दो-दो, तीन-तीन के हिसाब से फटी-पुरानी रजाई को इधर-उधर खींचते हुए रात काट देंगे और पोतों की बढ़ती हुई लाइन को देख कर खुश होने वाली बुढ़िया माँ, सरकारी अस्पताल से लाया हुआ लाल मिक्चर पी-पी कर खों-खों करती हुई रात काट देगी।

जी हां! यही है बड़े बाबू रामलाल का घर, जिसे लोग जाने क्यूं नर्क कहते हैं। आप बड़े बाबू का परिवार देखकर खुश नहीं हुए क्या? जानते हैं...कालोनी के लोग इन्हें क्या कहते हैं?—"आँख के अंधे"...ठीक ही तो है।

अपनी बरबादी देखकर भी इनकी आंखें बन्द हैं, इसलिए अंधे ही तो हैं ये।

अब आप ही सोचिए जरा। धरती रबड़ की तो है नहीं कि बड़े बाबू जैसे "आंख के अंधे" परिवार बढ़ाते जाएं तो यह धरती भी फैलती जाएगी। देश के नेताओं के पास कोई जादू वाला अलादीन का चिराग भी नहीं है, जिसे रगड़ते ही देश की खेती बढ़ जाए और महगाई छू-मन्तर हो जाए।

इलाज तो असल में एक ही है..."अंधों की आंखें खोलना" ताकि यह हरदम की चीख-पुकार बन्द हो और दवा के अभाव में खांसते-खांसते मरना रुक सके।

क्या कहा आपने ? अब बड़े साहब का स्वर्ग भी देखना चाहेंगे आप ? आइए, आपको इसी धरती पर "स्वर्ग" भी दिखाए देते हैं। चले आइए यही है बड़े साहब का बंगला।

बड़े साहब की आवाज पहचानते हैं न आप—"मुन्ना मुन्नी को दूध पिला दिया है न रानो ?" उपन्यास पर से निगाह उठाकर बड़े साहब ने पत्नी से प्यार भरा प्रश्न पूछा है। जवाब में सितार की सी मीठी आवाज में बताने वाली हैं बड़े साहब की सुघड़ पत्नी—"जी हां। दोनों बच्चों को स्कूल का "होम वर्क" कराके दूध पिला दिया। बच्चे तो सो भी गए हैं जी।"

मुस्कराती हुई बड़े साहब की पत्नी गर्म दूध का गिलास पति को देती है। बड़े साहब प्यार से पत्नी को पास बिठा लेते हैं।

टी. वी. पर कोई बढ़िया प्रोग्राम चल रहा है और दोनों पति-पत्नी निचिन्त भाव से कार्यक्रम देख रहे हैं।

बड़े साहब कहते हैं—"रानो ! अपने मकान की आखिरी किश्त इस महीने पूरी हो जाएगी, तो यह जिम्मेदारी भी खत्म समझो। अब सोचता हूं कि एक इंश्योरेंस पालिसी ले लें, ताकि बिटिया के ब्याह पर हमें एक मुश्त रकम मिल जाए। पत्नी मुस्करा कर सहमति देती है। टी. वी. कार्यक्रम खत्म हो गया है। बड़े साहब ने दूध पिया और पति-पत्नी सुख की नींद सो गए।

ये हैं खुशियों के बादशाह। आप ही कहिए, इन्हें भला बात-बात पर चीखने-चिल्लाने की जरूरत ही क्या है ? ये तो जीवन का आनन्द और सुख भोग रहे हैं और अपने साथ-साथ समाज और देश का मान भी बढ़ा रहे हैं।

इस घर को कालोनी वाले "स्वर्ग" कहते हैं। देख लिया न आपने भी जीते जी धरती पर ही स्वर्ग।

अरे.....रे ! देखिए तो सही...आज सबेरे-सबेरे ये बड़े बाबू दफ्तर का रास्ता भूलकर कहां चल दिए ? क्या कहा "परिवार कल्याण केन्द्र" जा रहे हैं ? सचमुच आज ये आपरेशन करा रहे हैं ? चलिए, शुक्र है भगवान का... आखिर इनकी आंखें भी खुल ही गयीं। देर से ही सही... सुख-समृद्धि का रास्ता इन्होंने भी आज चुन ही लिया है।

काश ! इन्होंने दो बच्चों के बाद इस रास्ते पर कदम बढ़ाये होते, तो "बड़े बाबू" और "बड़े साहब" के घरों को लोग 'नर्क' और 'स्वर्ग' न कहकर सिर्फ स्वर्ग ही कहते।

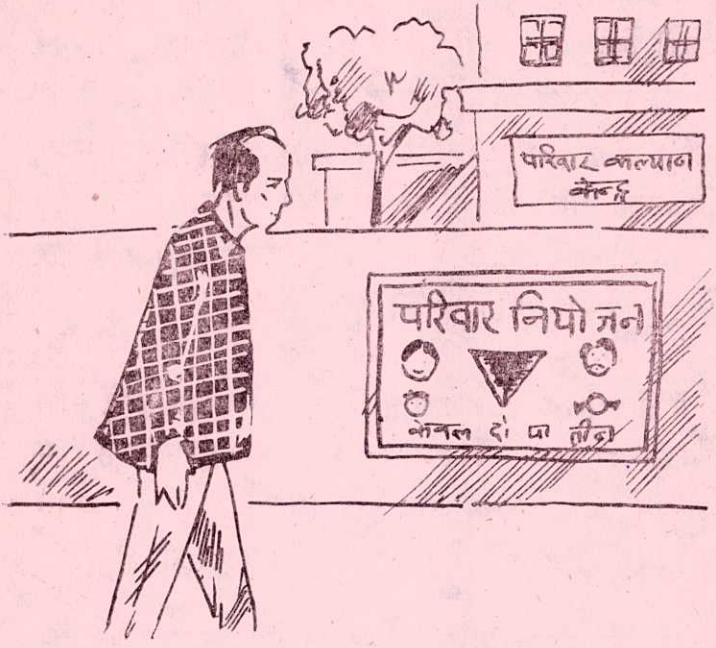

आपने तो नर्क और स्वर्ग दोनों ही देखे हैं। खूब गौर से देख लिए हैं न ? तो आइए, सबको चल कर बताएं—

"छोटा परिवार स्वर्ग है, बड़ा परिवार नर्क है।"